Date / /
Page
bilt 10 on 10 Student Notebooks

B.A Part-1 (H) Philosophy

डॉ० अनीता कुमारी गुप्ता
डो० के० कॉलेज बिरौल

बौद्ध दर्शन का प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत

प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत भगवान बुद्ध के उपदेशों का आधारभूत सिद्धांत है। बौद्ध दर्शन का यह ~~केन्द्री~~ केन्द्रीय सिद्धांत। यह द्वितीय और तृतीय आर्यसत्य के आर्यसत्य के अन्तर्गत है, दुःख की उत्पत्ति का कारण है एवं ~~इस~~ इस कारण का निरोध कर देने पर दुःख भी नहीं रहता। प्रतीत्यसमुत्पाद कार्यकारणवाद है। 'प्रतीत्य' का अर्थ है 'अपेक्षा रखकर' या 'निर्भर' अथवा 'आश्रित रहकर' एवं 'समुत्पाद' का अर्थ है उत्पत्ति, अतः प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ हुआ - कारण की अपेक्षा रखकर या कारण पर निर्भर रहकर कार्य की उत्पत्ति। कार्य सदा कारण सापेक्ष होता है। कारण के होने पर ही कार्य होता है तथा कारण के न रहने पर कार्य भी नहीं रहता है और न उत्पन्न हो सकता है। दुःख संसार है, दुःख निरोध निर्वाण है। सापेक्ष दृष्टि से प्रतीत्यसमुत्पाद दुःख समुदाय - रूप संसार है; पारमार्थिक दृष्टि से प्रतीत्यसमुत्पाद प्रपञ्चोपशम और शिव निर्वाण है। सापेक्ष रूप में प्रतीत्यसमुत्पाद कारण कार्य वाद है। इसका नियम है 'अस्मिन् सति, इदं भवति' अर्थात कारण के होने पर कार्य होता है। जो उत्पन्न होता है, वह कार्य होता है, जो कार्य है, वह सापेक्ष है जो सापेक्ष है, वह वस्तुतः न 'सत्' है न 'असत्' है केवल 'प्रतीति' है। यह बुद्ध की "मध्यमा प्रतिपद है जो इन्द्रियों और बुद्धि विकल्पों द्वारा अनुभूत समस्त लौकिक पदार्थों को सापेक्ष और प्रातीतिक मानती है; तथा अन्तों अर्थात द्वन्द्वों का निषेध करती है। कार्यभूत सापेक्ष जगत न सत् है और न असत्, न अस्ति है, न नास्ति है, न शाश्वत है, न उच्छेद रूप है। पारमार्थिक दृष्टि से यही प्रतीत्यसमुत्पाद प्रपञ्चोपशम, शिव और अमृत निर्वाण है। इसलिए स्वयं भगवान बुद्ध ने इस प्रतीत्यसमुत्पाद को 'बोधि' कहा है, जिसका साक्षात्कार उन्होंने गया के पास बोधिवृक्ष के नीचे मार-विजय के पश्चात प्रतीत्यसमुत्पाद पर अनुलोम और प्रतिलोम रीति से विचार किया। तृष्णासक्त लोगों के लिए कारण-कार्य-शृंखला-रूप प्रतीत्यसमुत्पाद को समझना अत्यंत कठिन है। इन लोगों के लिए निर्वाण पाना भी अत्यंत कठिन है। क्~~के~~ निर्वाण नहीं सारे संस्कारों का उपशम, समस्त उपादानों का निरोध होकर अमृत प्राप्त होता है। —— X ——